पाठ- 3 : तुलसीदास

मूल भाव- सीता और लक्ष्मण सहित राम के वन चले जाने पर अयोध्यावासी बड़े दुखी हुए थे। राम के छोटे भाई भरत को सबसे अधिक दुख हुआ था। कैकेयी ने राजा दशरथ से राम के लिए वनवास और भरत के लिए राज्याभिषेक का वरदान माँगा था। भरत के लिए यह बात अकल्पनीय थी। राजगद्दी पर तो बड़े भाई का अधिकार होता है, किंतु यहाँ उन्हें वनवास दे दिया गया। भरत को लगता था कि इस सबके दोषी वही हैं। इससे भरत को अपयश मिल सकता था। इसलिए भरत अपने कुल-गुरु वसिष्ठ और राजपरिवार सहित अयोध्या के नागरिकों को साथ लेकर राम को लौटाने के लिए वन की ओर चल पड़े।

मुख्य बिंदु

- भरत कहते हैं कि अपने स्वामी राम का स्वभाव मैं जानता हूँ। वे अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा और स्नेह है।
- आगे वे कहते हैं कि बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी मेरे मन को कभी नहीं तोड़ा। मैंने प्रभु की कृपा करने की रीति को हृदय से भलीभाँति देखा है और अनुभव किया है। मेरे हारने पर भी खेल में प्रभु जिताते रहे हैं। मैंने भी प्रेम और संकोचवश कभी उनके सामने मुँह नहीं खोला। प्रेम के प्यासे मेरे नेत्र आज तक प्रभु राम के दर्शन से तृप्त नहीं हुए।
- भरत कहते हैं कि विधाता मेरा दुलार न सह सका। उसने नीच माता के बहाने मेरे और स्वामी के बीच अंतर डाल दिया। यह भी कहना आज मुझे शोभा नहीं देता; क्योंकि अपनी समझ से कौन साधु और पवित्र हुआ है? माता नीच है और मैं सदाचारी और साधु हूँ। ऐसा हृदय में लाना ही करोड़ दुराचारों के समान है। क्या कोदो की बाली उत्तम धान फल सकती है? क्याकाली घोंघी मोती उत्पन्न कर सकती है? स्वप्न में भी किसी को दोष देने का लेश भी नहीं है।
- मेरा अभाग्य ही अथाह समुद्र है। मैंने अपने पापों का परिणाम समझे बिना ही माता को कटु वचन कहकर व्यर्थ ही जलाया। मैं अपने हृदय में सब ओर खोज कर हार गया लेकिन मेरी भलाई का कोई साधन नहीं सूझता।
- एक ही प्रकार से मेरा भला है। वह यह है कि गुरु महाराज सर्वसमर्थ और रामजी मेरे स्वामी हैं। इसी से परिणाम मुझे अच्छा जान पड़ता है। यह प्रेम है या प्रपंच (छल-कपट), झूठ है या सच। इसे सर्वज्ञ मुनि वसिष्ठ जी और अंतर्यामी श्री रघुनाथजी जानते हैं।
- शिल्प सौंदर्य : अलंकारों का सहज प्रयोग: तुलसी की कविता में भाव-वर्णन के साथ-साथ अलंकार स्वाभाविक रूप में पिरोए गए हैं। जैसे:

  (क) 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' - नीरज के समान भरत के नेत्रों में स्नेह का जल बढ़ गया। उपमा, रूपक तथा अनुप्रास का सहज सौंदर्य।

  (ख) अनुप्रास के सहज प्रयोग में भी तुलसी सिद्धहस्त हैं; जैसे - सुनि मुनि वचन राम रुख पाई।
- प्रांजल अवधी - तुलसीदास ने मानस की रचना अवधी भाषा में की है, उनकी अवधी बहुत मधुर प्रांजल शब्दावली से युक्त है
- दोहा-चौपाई छंद - यहां दोहा और चौपाई छंद

शिक्षार्थी दिशानिर्देश

सराहना पक्ष

राम और भरत में परस्पर गहरा प्रेम है। भरत के मन में राम के प्रति आदर भाव है और वे चाहते हैं कि राम अयोध्या वापस लौट चलें और उनके साथ ही रहें।

आवेश में कैकई के प्रति कहे वचनों के लिए भरत के मन में पश्चाताप भी है।

तुलसीदास का रामचरित मानस रामकथा के माध्यम से आदर्श व्यवहार और आचरण की सीख भी देता है। इस अंश में एक ओर भाइयों के परस्पर प्रेम की और दूसरी ओर गुरुजनों का सम्मान करने की सीख है, जो आज के संदर्भों में भी उपयुक्त और प्रासंगिक है।

तुलसी की भाषा और कथन भंगिमाओं की भी आपने अनेक विशेषताएँ पढ़ीं। कवि शब्दों का प्रयोग बड़ी चातुरी से करता है। मनोभावों के चित्रण में वह सिद्धहस्त है।

अपना मूल्यांकन करें

'बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा' भरत की इस मान्यता का क्या कारण है?

'साधु सभाँ गुरु-प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ'- कह कर भरत क्या प्रमाणित करना चाहते हैं?

'राम और भरत का प्रेम अद्वितीय था।' तुलसी के कथनों से प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए।

भरत को माँ के प्रति आक्रोश क्यों था? अपनी प्रतिक्रिया को वे उचित क्यों नहीं मानते?

तुलसी की काव्य-शैली की दो विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए।

शिक्षार्थी दिशानिर्देश